

শ্রীঃ
শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায় নমঃ
শ্রীমান্ বেক্টনাথার্যঃ করিতাকিঁককেসরী।
বেদান্তাচার্যরর্যো মে সন্নিধত্তাং সদা হৃদি ॥

শ্রী মেল্পপত্তূর্ নারায়ণভট্টতিরি ঝিরচিতম্
॥শ্রীমন্নারায়ণীয়ম্ ॥

দশক - ১৮

This document has been prepared by*
Sunder Kidambi
with the blessings of
শ্রী রঙ্গরামানুজ মহাদেশিকন্
His Holiness śrīmad āṇḍavan of śrīraṅgam

*This was typeset using Bengali for T_EX.

শ্রীঃ
শ্রীমতে কৃষ্ণায় পরব্রহ্মণে নমঃ
শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

॥শ্রীমন্নारायणीयम् ॥

दशक - १८

पृथुचरितवर्णनम्

जातस्य ध्रुवकुल एव तुङ्गकीर्ते-
रङ्गस्य ब्राजनि सुतः स रेननाम्ना।
यद्दोषव्यथितमतिः स राजवर्य-
स्वरतपादे निहितमना वनं गतोभूत् ॥ १ ॥

पापोपि क्षितितलपालनाय रेनः
पौरादैरुपनिहितः कठोररीर्यः।
सर्वेभ्यो निजबलमेव सम्प्रशंसन
भूचक्रे तव यजनान्ययं न्यरौतसीत् ॥ २ ॥

सम्प्राप्ते हितकथनाय तापसौघे
मञ्जोन्यो भूरनपतिर्न कश्चनेति।
अग्निदाबचनपरौ मुनीश्वरैस्त्रैः
शापाम्नौ शलभदशामनायि रेनः ॥ ३ ॥

तन्नाशात् खलजनतीरुकैमुनीन्द्रे-
स्त्रन्मात्रा चिरपरिरक्षिते तदङ्गे।
त्यज्जाघे परिमथितादथोरुदण्डात्
दोर्दण्डे परिमथिते त्वमारिरासीः ॥ ४ ॥

विख्यातः पृथुरिति तापसोपदिष्टैः
सूतदैर्यः परिणुतभारिभूरिरीर्यः।
रेनार्त्या कवलितसम्पदं धरित्री-
मात्रान्तां निजधनुषा समामकार्षीः ॥ ५ ॥

ভূয়স্তাং নিজকুলমুখ্যরতসযুক্তৈ-
 দেবদৈঃ সমুচিতচারুভাজনেষু।
 অন্নাদীন্যভিলষিতানি যানি তানি
 স্বচ্ছন্দং সুরভিতনূমদূহস্তরম্ ॥ ৬ ॥

আত্মানং যজতি মথৈস্তরযি ত্রিধাম-
 ন্নারক্কে শততমরাজিমেধযাগে।
 স্পর্ধালুঃ শতমথ এত্য নীচরেষো
 হস্ত্রাশ্বং তব তনযাত্ পরাজিতোভূত্ ॥ ৭ ॥

দেবেন্দ্রং মুহুরিতি রাজিনং হরন্তং
 বহৌ তং মুনিবরমণ্ডলে জুহুষৌ।
 রুক্মানে কমলভরে ক্রতোসসমাপ্তৌ
 সাক্ষাত্ ত্বং মধুরিপুমৈক্ষথাঃ স্বয়ং স্বম্ ॥ ৮ ॥

তদত্তং বরমুপলভ্য ভক্তিমেকাং
 গঙগান্তে বিহিতপদঃ কদাপি দেব।
 সত্রস্থং মুনিনিবহং হিতানি শংস-
 ন্নৈক্ষিষ্ঠাঃ সনকমুখান্ মুনীন্ পুরস্তাত্ ॥ ৯ ॥

বিজ্ঞানং সনকমুখোদিতং দধানঃ
 স্বাত্মানং স্বয়মগমো বনান্তসেবী।
 তত্তাদৃকপৃথুরপুরীশ সত্বরং মে
 রোগৌঘং প্রশময বাতগেহরাসিন্ ॥ ১০ ॥
